Sanvahak, Vol.-1; Issue-2 (Oct.-Dec.) 2025 : PP-29-33

Sanvahak (संवाहक)

A Peer Reviewed, Multidisciplinary (All Subjects) & Multilingual (All Languages) Quarterly Research journal

ISSN : 3108-1347 (Online)
Vol.-1; Issue-2 (Oct.-Dec,) 2025
Page No.-29-33
©2025 **Sanvahak**
https:// sanvahak.gyanvividha.com
Author's :

सिनगरवार पांडूरंग गिरजप्पा

रामकृष्ण परमहंस महाविद्यालय,
महाविद्यालय नळदुर्ग, तांबरी जि. धाराशिव.

Corresponding Author :

सिनगरवार पांडूरंग गिरजप्पा

रामकृष्ण परमहंस महाविद्यालय,
महाविद्यालय नळदुर्ग, तांबरी जि. धाराशिव.

बड़ौदा के विकास में सयाजीराव गायकवाड तृतीय का योगदान

वडोदरा (Vadodara), जिसे बड़ौदा (Baroda) भी कहा जाता है, भारत के गुजरात राज्य का दुसरा सबसे बड़ा नगर है। यह वडोदरा ज़िले का मुख्यालय है और राज्य की राजधानी, गाँधीनगर, से 141 किमी दूर विश्वामित्री नदी के किनारे बसा हुआ है। "भारतीय रेल और राष्ट्रीय राजमार्ग 48 व राष्ट्रीय राजमार्ग 64 इसे दिल्ली, मुम्बई और देश के सभी अन्य भागों से जोड़ते हैं। नगर का नाम 'वड' (बरगद) के वृक्ष पर पड़ा है।"[1]

इसका सबसे पुराना उल्लेख 812 ई. के अधिकारदान या राजपत्र में है, जिसमें इसे वादपद्रक बताया गया है। यह अंकोत्तका शहर से संबद्ध बस्ती थी। इस क्षेत्र को जैनियों से छीनने वाले डोडिया राजपूत वंश के राजा चंदन के नाम पर इसे चंदनवाटी के नाम से भी जाना जाता था। "समय - समय पर इस शहर के नए नामकरण होते रहे, जैसे वारावती, वातपत्रक, बड़ौदा और 1971 में वडोदरा।"[2]

भारत के इतिहास में इस शहर का पहला उल्लेख 812 ई. में इस क्षेत्र में आकर बसे व्यापारियों के समय से उपलब्ध होता है। वर्ष ई. 1297 में यह प्रान्त हिंदू शासन के अधीन हिंदूओ के वर्चस्व में था। ईसाई यूग के प्रारम्भ में यह क्षेत्र गुप्त साम्राज्य के अधीन था। भयंकर युद्ध के बाद, इस क्षेत्र पर चालुक्य वंश सत्ता में आया। अंत में, इस राज्य पर सोलंकी राजपूतों ने कब्जा कर लिया। इस समय तक मुस्लिम शासन भारत वर्ष में फैल रहा था और देखते ही देखते वडोदरा की सत्ता की बागडोर दिल्ली के सुल्तानों के हाथ आ गई। वडोदरा पर दिल्ली के सुल्तानों ने एक लंबे समय तक शासन किया, जब तक वे मुगल सम्राटों द्वारा परास्त नहीं किए गए। मुगलों की सबसे बड़ी समस्या मराठा शाशक थे जिन्होने ने धीरे-धीरे से लेकिन अंततः इस क्षेत्र पर अपना अधिकार कर लिया और यह मराठा वंश गायकवाड़ (Gaekwads) की राजधानी बन

गया। सर सयाजी राव गायकवाड़ तृतीय (1875-1939), इस वंश के सबसे सक्षम और लोकप्रिय शासक थे। उन्होने इस क्षेत्र में कई सरकारी और नौकरशाही सुधार किए, हालांकि ब्रिटिश राज का क्षेत्र पर एक बड़ा प्रभाव था। बड़ौदा भारत की स्वतंत्रता तक एक रियासत बना रहा। कई अन्य रियासतों की तरह, बड़ौदा राज्य भी 1947 में भारत डोमिनियन में शामिल हो गया।

विश्वामित्री नदी के तट पर स्थित वडोदरा उर्फ बड़ौदा शहर भारत के सबसे बड़े महानगरीय शहरों में अठारहवें स्थान पर है। वडोदरा शहर वडोदरा जिले का प्रशासनिक मुख्यालय है और इसे उद्यानों का शहर, औद्योगिक राजधानी और गुजरात के तीसरे सबसे अधिक आबादी वाले शहर से भी जाना जाता है। इसकी समृद्ध सांस्कृतिक परंपराओं के कारण अधिक लोकप्रिय, संस्कारी नगरी के लिए प्रसिद्ध हैं।

सयाजीराव गायकवाड़ तृतीय का मूल नाम श्रीमन्त गोपालराव गायकवाड था। उनका जन्म 11 मार्च, 1863 को नासिक के कुल्लाने गांव में हुआ था। इनके पिता काशीराव नाथ का बड़ौदा राजपरिवार से बहुत दूर का रिश्ता रहा था। बड़ौदा राजपरिवार के महाराज मल्हार राव गायकवाड़ की निःसंतान मृत्यु के पश्चात उनकी विधवा पत्नी महारानी जमुना बाई ने गोपाल राव को 27 मई 1875 ई.में गोद ले लिया और उनका नाम रखा गया सयाजीराव गायकवाड। महारानी ने इस दत्तक लिए हुए पुत्र राज्याभिषेक अठारह वर्ष की उम्र में अट्ठाइस नवम्बर 1881 ई.को करा दिया। सन 1875 से 1939 तक बड़ोदा रियासत के महाराजा थे। वे एक दूरदर्शी एवं विद्वान शासक थे। उन्होने अपने शासनकाल में वडोदरा की कायापलट कर दी थी। इनको भारतीय पुस्तकालय आंदोलन का जनक भी माना गया है। इन्होने इस आन्दोलन की शुरुआत सन 1910 में की थी। इन्होंने ही भीमराव अम्बेडकर को विदेश पढ़ने जाने के लिए छात्रवृति प्रदान की थी। महाराजा सयाजीराव विजया बैंक (अब बैंक ऑफ़ बड़ौदा) के संस्थापक भी थे। उन्हें भारत का अंतिम आदर्श राजा कहा जाता है। वे आधुनिक भारत की निर्मिति प्रक्रिया के एक शिल्पी माने जाते हैं।

उनकी संताने श्रीमंत महाराज कुमारी बाजुबाई गायकवाड, श्रीमंत महाराज कुमारी पुतलाबाई गायकवाड, युवराज साहिब फतेहसिंह राव गायकवाड़, श्रीमंत महाराज कुमार जयसिंह राव गायकवाड़, श्रीमंत महाराज शिवाजी राव गायकवाड़, महारानी इन्दिरा देवी, श्रीमंत महाराज कुमार धैर्यशील राव गायकवाड़ इत्यादि। उनका राजवंश गायकवाड़ था। धर्म हिंदू था।

सयाजीराव गायकवाड़ तृतीय के लिए राज्य चलाना एक शास्त्र था, इसलिए राजा का ज्ञानसम्पन्न होना अत्यधिक आवश्यक है, यह जानकर सयाजीराव ने स्वयं ज्ञान पाया। उन्होंने विश्वभर की शासन पद्धतियों का अध्ययन किया। सुशासन और जनता के ज्ञानात्मक प्रबोधन कार्य से जनकल्याण का व्रत हाथ में लिया। शिक्षण और विज्ञान ही प्रगति तथा परिवर्तन का साधन है, इसे महाराजा ने अच्छी तरह जाना था। इसलिए मुफ्त और अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा, सुशासन, विधि-न्याय, खेती, उद्योगों को मदद, सामाजिक-धार्मिक सुधार, जाति-धर्मों के बीच की ऊँच-नीच को समाप्त करके समता, मानवता और सर्वधर्म समभाव के मार्ग को चुना था। इसी मार्ग को इन्होंने अपने बड़ौदा राज्य को चलाने में अपनाया। महाराजा सयाजीराव ने बड़ौदा राज्य को विकसित करने में सक्षम थे। उनके पिता काशीनाथ गायकवाड का संबंध बड़ौदा राज परिवार से था। वे बारह वर्ष की उम्र तक अनपढ़ रहे। सयाजीराव गायकवाड को शिक्षा देकर लायक बनाने की योजना रानी जमुना बाई ने बनाई। बड़ौदा राज्य के ब्रिटिश रेजिमेंट और दीवान राजा सर . टी.माधव राव ने सयाजी राव को शिक्षित करने की जिम्मेदारी उठाई।

महाराजा सयाजीराव शैक्षिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और वाङ्मयीन कलाओं के आश्रयदाता थे। देश के कई युगपुरुषों और संस्थाओं को उन्होंने सहायता प्रदान की जिनमें दादाभाई नौरोजी, नामदार गोखले, लोकमान्य तिलक, महात्मा गांधी, न्यायमूर्ति रानडे, महात्मा फुले, राजर्षि शाहू, डॉ. आम्बेडकर, मदनमोहन मालवीय, कर्मवीर भाऊराव, वीर सावरकर, महर्षि शिंदे का नामोल्लेख किया जा सकता है। अनेक संस्थाओं और व्यक्तियों को महाराजा

की ओर से करोड़ों रुपयों की सहायता प्राप्त हुई। महाराज सयाजीराव गायकवाड़ मराठा कुनबी (कुर्मी) जाति के थे। महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ स्वतंत्रता सेनानियों के समर्थक और प्रतिभाशाली लेखक थे, उनके व्यक्तित्व की यह नई पहचान बनी थी। उनकी किताबें, भाषण, पत्र, आदेश और दैनंदिनी देश का अनमोल खजाना है। सुशासन और जनकल्याण में मुक्ति की खोज करनेवाले सयाजीराव का बलशाली भारत के लिए एक सपना था।

अपने कार्यकाल 1881 से 1939 के दौरान उन्होंने एक कर्तव्यतत्पर तथा पूरोगामी संस्थानिक के तौर पर अपनी अमिट छवि बनाई। बड़ौदा राज्य का कारोबार उन्होंने 28 दिसम्बर 1881 ई .से वास्तव में शुरु किया। सर्वप्रथम बड़ौदा रियासत की आर्थिक स्थिति में सुधार किया। प्रशासन का विकेंद्रीकरण कर उन्होंने कारोबार की प्रणाली में सरलता का सूत्रपात किया। सन 1883 में सलाहकारों को नियुक्त कर जनकल्याणकारी योजनाएं बनाई। न्याय व्यवस्था में विशेष सुधार किया। सन 1904 में ग्राम पंचायत का पुनरुज्जीवन किया। 1893 में प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य बनाया। 1906 में इस योजना को पूरे राज्य में लागू कराया। जरूरतमंद तथा गरीब विद्यार्थियों को छात्रवृति देकर उच्च शिक्षा के अवसर प्रदान किए। उद्योग का प्रशिक्षण उपलब्ध कराने कलाभुवन संस्था स्थापित की। सयाजी साहित्यमाला तथा सयाजी बाल ज्ञानमाला के माध्यम से उच्चतम ग्रंथों का अनुवाद प्रकाशित किया। प्रत्येक ग्राम में ग्रंथालय का निर्माण किया और साथ-साथ चलते फिरते ग्रंथालयों की भी सुविधा उपलब्ध करायी। सामाजिक क्षेत्र में उनका बड़ा योगदान रहा। पर्दा पद्धति पर रोक, कन्या विक्रय पर रोक, मिश्र जाति विवाह को समर्थन, महिलाओं को वारिस अधिकार, अस्पृश्यता निवारण, विधवा विवाह और तलाक के अधिकार का कानून बनाए।

सन 1882 में अछूतों के लिए 18 पाठशालाएं खोली। सत्यशोधक समाज से एवं सत्यशोधक समाज के कार्यकर्ताओं से उनका गहरा नाता रहा। 1885 में महाराज की भेंट पूना में ज्योतिबा राव फुले से हुई और महाराज उनके 'सत्य शोधक समाज' के कार्यों से बहुत प्रभावित हुए। ई. 1904 में सामाजिक सुधारों में उनका प्रत्यक्ष योगदान देखते हुए ही उन्हें राष्ट्रीय सामाजिक परिषद का अध्यक्ष बनाया गया।

बड़ौदा में उनके द्वारा सुन्दर वास्तु, राजमहल, वस्तु संग्रहालय, कलाविधि, श्री सयाजी रुग्णालय, नजरबाग राजवाड़ा, महाविद्यालयों की इमारते आदि निर्माणों से बड़ौदा नगरी कलापूर्ण तथा प्रेक्षणीय बनी है। उन्हें पर्यटन की विशेष रुचि थी। उन्होंने दुनिया भर में यात्रा की जहाँ-जहाँ जो-जो उन्हें अच्छा लगा उन्होंने अपने संस्थान के विकास हेतु उसका उपयोग और प्रयोग किया। लन्दन के प्रथम तथा द्वितीय गोलमेज परिषद में भी वे उपस्थित रहे। ज्ञानवृद्धि, समाजसुधार और अनुशासन में वे सफल रहे।

भारत के इतिहास में जितने भी शुद्र राजा हो गये, ब्राम्हणों ने उन्हें धर्म के नाम गुमराह करके अपमानित किया। यह एक ऐतिहासिक कड़वी सचाई है। प्रत्येक प्रान्तों में शूद्र राजाओं का ही आधिपत्य था। छत्रपति शिवाजी महाराज को भी शूद्र कहकर ब्राम्हणों ने राज्याभिषेक करने से इन्कार कर अपमानित किया। आगे शिवाजी का राज्याभिषेक किया मगर वेंदोक्त पद्धति से न होकर पुराणोक्त पद्धति से हुआ। हिन्दू राज्य की स्थापना करने वाले शिवाजी महाराज को ब्राम्हणों ने बुरी तरह से अपमानित करने का नीच कार्य किया। इतिहास में ब्राम्हण जाति से शूद्र राजाओं को अपमानित करने का सिलसिला बहुत जोरों से चला। सतारा के राजा प्रताप सिंह को भी ब्राम्हण पंडितों से अपना वर्चस्व सिद्ध करने के लिए संघर्ष करना पड़ा। राजर्षि छत्रपति शाहूजी कोल्हापुर के शूद्र राजा थे। इसके अलावा भी दक्षिण भारत में मराठा और कुन्वी महाराजा सतारा, धार, देवास, नागपुर आदि स्थानों पर शासन करते थे। ब्राम्हण पुरोहितों ने उनका संस्कार पुराणोक्त पद्धति से करके अपमानित किया। बड़ौदा राज्य में सभी विधि पुराणोक्त पद्धति से ही रही थी। सयाजीराव गायकवाड़ को यूरोप से लौटने के बाद प्रायश्चित करना पड़ा था। उन्होंने राजोवध्याय राजाराम शास्त्री को वेदोक्त विधि से कार्य करने की आज्ञा दी। उन्होंने राजा की बात नहीं मानी और इस्तीफा देना पसंद किया। शूद्र राजाओं को अपना वर्चस्व स्थापित करने के लिए हर समय ब्राम्हणों से संघर्ष करना पड़ा श्रीमंत सयाजीराव

महाराज इस घटना से दुखी होते थे। ब्राम्हणों के इस व्यवहार से महाराज का क्रान्तिकारी मन ब्राम्हणी धर्म के विरुद्ध संघर्ष करने को जाग उठा था।

सामाजिक क्रान्ति संग्राम के प्रणेता महात्मा फुले ने 1890 ई. तक बहुजन समाज को मुक्ति दिलाने हेतु अपना जीवन समर्पित किया। महात्मा फुले के अधूरे सपने को पूरा करने में सयाजीराव गायकवाड़ ने अपना तन, मन और धन समर्पित कर दिया। महाराष्ट्र के हर तालुका और गांव गांव में उनके सत्य शोधक समाज के कार्यकत्ता थे। 1885 ई. में महात्मा फुले और सयाजीराव को पूना में भेंट हुई और दो मास तक पूना में रहकर फुले के साथ अपना सहवास बढ़ाया। वे सत्य-शोधक समाज के मत प्रणाली से बहुत प्रभावित हुए। फुले के बहुजन समाज के उद्धार के कार्य से प्रभावित हुए। इसी प्रभाव के संस्कार को लेकर सयाजीराव बड़ौदा चले गये। उन्होंने ब्राम्हणी समाज व्यवस्था को दफनाने के लिए अपने राज्य में ब्राम्हणों के विरुद्ध संघर्ष करने का निश्चय करके रचनात्मक कार्य को शुरु करने का मन में ठान लिया। श्रीमंत सयाजीराव को सत्य-शोधक समाज आन्दोलन के कार्य से नई दृष्टि प्राप्त हो गयी थी। इसी के परिणाम स्वरूप उन्होंने अपने राज्य में ब्राम्हणेतर बहुजन समाज में शिक्षा का कार्य किया। शिक्षा से प्रजा में समझदारी बढ़ेगी और हक एवं अधिकार के प्रति जागृत होकर क्रांति कार्य के लिए प्रवृत्त हो जायेगें। उन्होंने गांव गांव पुस्तकालय खोलने कार्यक्रम चलाया। निशुल्क और अनिवार्य शिक्षा की शुरूआत की। सयाजी ग्रंथ माला प्रकाशित किया एवं कला भवन की स्थापना की। इनके शिक्षा के प्रति प्रेम को देख कर 1920 में हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी का कुलपति बनाया गया। महाराजा ने बाबा साहेब अम्बेडकर को उच्च शिक्षा पाने के लिए 4 जून 1913 छात्रवृति देकर महान कार्य किया। सन 1915 में अखिल भारतीय कूर्मि क्षत्रिय महासभा के दसवें अधिवेशन की अध्यक्षता आपके अनुज श्रीमंत सम्पतराव गायकवाड ने की थी। अक्टूबर 1938 में अपनी अंतिम यूरोपीय यात्रा से लौटते समय जहाज में बीमार पड़े तो फिर संभल न सके और 6 फरवरी 1939 को उनका देहांतवास हो गया। आपके देहांत का समाचार जानकर बाबा साहब अम्बेडकर ने कहा था- "महाराजा के रूप में आप बड़ा बड़ौदा राज्य का कर्तव्यनिष्ठ राजा ,सामाजिक सुधार कार्य के नेता और अछूतों का मित्र गंवाया।"[3]

शिक्षा और वास्तुकला के क्षेत्र में सयाजीराव की गहरी रुचि होने के कारण इन्होने 1906 में और 1910 में अमेरिका और यूरोप की यात्रायें की। 1906 में अपनी पहली अमेरिका यात्रा के दौरान वह एक अफ्रीकी-अमेरिकी समाज सुधारक बुकर टी वाशिंगटन (Booker T. Washington) से मिले, जिन्होंने दस्ता से निकलकर हैम्पटन संस्थान, वर्जीनिया (Hampton Institute, Virginia) से अपनी शिक्षा पूरी की थी और वे टस्केगी संस्थान, अलबामा (Tuskegee Institute, Alabama) के संस्थापक भी थे। अपनी अमेरिका की दोनों यात्राओं के दौरान सयाजी राव ने वाशिंगटन, डीसी, फिलाडेल्फिया, शिकागो, डेन्वर, और सैन फ्रांसिस्को का मुख्य रूप से संग्रहालयों, कला दीर्घाओं, और पुस्तकालयों का दौरा किया। 1923 में अपनी यूरोप की यात्रा के दौरान सयाजीराव ने राजा विक्टर एमैनुअल और बेनिटो मुसोलिनी (Victor Emmanuel and Benito Mussolini) से मुलाकात की। सयाजीराव प्रथम विश्व युद्ध के बाद इटली और रोम की युद्ध के बाद बनी इमारतों, स्टेडियमों, पार्कों और चौड़ी सड़कों से बहुत प्रभावित थे। अपनी इन यात्राओं के दौरान सयाजीराव को विश्वास हो गया की शिक्षा सभी सुधारों का आधार है। उनके इस विश्वास ने उन्हें वड़ोदरा में अनिवार्य मुफ्त प्राथमिक शिक्षा और एक राज्य समर्थित मुफ्त सार्वजनिक पुस्तकालय प्रणाली लागू करने के लिए प्रेरित किया। वे उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए राज्य का समर्थन देने के लिए भी प्रतिबद्ध थे।

महाराजा सयाजीराव ने अपनी वस्तु दृष्टि को लागू करने के लिए ब्रिटिश इंजीनियरों आर.एफ. चिसॉम और मेजर आर.एन मंट (R. F. Chisolm and Major R. N. Mant) को राज्य आर्किटेक्ट के रूप में भर्ती किया, और अपनी राजधानी के सार्वजनिक भवनों के रखरखाव के लिए एक संरक्षक नियुक्त भी नियुक्त किया। उनके प्रमुख कामों में लक्ष्मी विला पैलेस, कमति (समिति) बाग, और रेजीडेंसी शामिल हैं, जिन पर अरबी शैली (Saracenic) का प्रभाव

देखा जा सकता है। चिसोम और मंट के कामो का प्रभाव बाद में एडवर्ड लुटियन (Edward Lutyens) के दिल्ली के वास्तुकला के कामों पर देखा जा सकता है। इस विश्वास के साथ कि, भारत के औद्योगिक विकास के बिना प्रगति नहीं कर सकता है। महाराजा सयाजीराव ने पुराने ईंट और मोर्टार के उद्योग के स्थान पर, स्टील और कांच के नये उद्योगों को मंजूरी दी।

बड़ौदा के आधुनिकीकरण और शहरीकरण का आधार बना, बड़ौदा कॉलेज और कला स्कूल कलाभवन की स्थापना, जिसने इंजीनियरिंग और वास्तुकला के साथ कला पर भी जोर दिया। इन संस्थानों पर अमेरिकी टस्केगी संस्थान (Tuskegee Institute) और यूरोप के स्टाटलीचेस बॉहॉस (Staatliches Bauhaus) जैसे संस्थानों के विचारों का प्रभाव था। पश्चिमी विचारों ने सयाजीराव के बाद भी बड़ौदा को प्रभावित करना जारी रखा। 1941 में, हरमन गोएत्ज़, एक जर्मन प्रवासी, ने बड़ौदा संग्रहालय के निदेशक का पदभार संभाल लिया। गोएत्ज़ ने समकालीन भारतीय कला का समर्थन किया और बड़ौदा में दृश्य कला शिक्षा (visual arts education) को बढ़ावा देने के संग्रहालय का इस्तेमाल किया। महाराजा फतेसिंहराव संग्रहालय 1961 में लक्ष्मी विला पैलेस परिसर में स्थापित किया गया था, जिस वर्ष गुजरात राज्य बनाया गया था।

संक्षेप में कह सकते हैं कि बड़ौदा भारत की स्वतंत्रता तक एक राजसी राज्य बना रहा। कई अन्य रियासतों की तरह, बड़ौदा राज्य भी 1947 में भारत डोमिनियन में शामिल हो गया। इस तरह से बड़ौदा के महाराजा सयाजीराव गायकवाड तृतीय ने अपना विशिष्ट योगदान दिया है।

संदर्भ - सूची :

1. Gujarat part people of India a state series, Rajendra baherilal, Anthropological survey of India, popular prkashan, 2003, पृ.-130.
2. The rules of Baroda, Baroda state press, Anjali Desai, 1934, पृ.-89.
3. लेख, जागृति इतिहास डेस्क, श्रीमंत सयाजीराव गायकवाड, 5 मार्च 2009, पृ.-134.

•